Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-3 | July – August – September 2025

Original Article

'आदमी जमाने का' कहानी की युग सापेक्षता

प्रो. डॉ. संगीता विष्णु भोसले

वसुंधरा कला महाविद्यालय,

जुळे सोलापुर, सोलापुर (महाराष्ट्र)

Manuscript ID: yrj-140321

ISSN: 2277-7911
Impact Factor – 5.958

Volume 14
Issue 3
July-August-Sept.- 2025
Pp. 178 - 182

Submitted: 27 July 2025
Revised: 16 Aug 2025
Accepted: 20 Aug 2025
Published: 10 Sept. 2025

Corresponding Author:
प्रो. डॉ. संगीता विष्णु भोसले

Quick Response Code:

Web. https://yra.ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.22079519

DOI Link: https://doi.org/10.5281/zenodo.22079519

Creative Commons

OPEN ACCESS

प्रस्तावना:

जहाँ राजनीति शिथिल, अपाहिज और व्यक्तिगत स्वार्थ का साधन बन जाती है वहाँ समाज के उन्नति का मार्ग अवरूध्द हो जाता है। आज सामान्य जन जीवन राजनीति से प्रभावित है। साहित्यकार युगधर्मी होता है। युगधर्मी साहित्यकार की पहचान उसके अनुभव विश्व से हो जाती है। जीवन में जितना अधिक संघर्ष अनुभव की व्याप्ति उतनी ही अधिक होती है। हिमांशु जाशी का जीवन संघर्ष से भरा है। वे इन अनुभवों को अभिशाप के बदले वरदान मानते है। उनके अनुभवों का ही प्रतिफल है कि कहानी संसार में सांसारिक विविधता दिखाई देती है। इसलिए उसकी रचना का अध्ययन करने से पूर्व उस युग की पृष्ठभूमी और साहित्यकार का व्यक्तित्व रचना में झलकता है। 'आदमी जगाने का' कहानी राजनीतिक समस्या प्रधान है। जिसका प्रकाशन १९६५ में हुआ है। अतः साठोत्तरी राजनीतिक परिवेश को जान लेने के बाद ही उसकी सापेक्षता को समझा जा सकता है। सापेक्षता का अर्थ सापेक्ष होने का भाव है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:

प्रो. डॉ. संगीता विष्णु भोसले (2025). 'आदमी जमाने का' कहानी की युग सापेक्षता. Young Researcher, 14(3), 178 - 182. https://doi.org/10.5281/zenodo.22079519

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-3 | July – August – September 2025

साठोत्तरी राजनीतिक परिवेश:

सन १९६० के बाद राजनीति का आदर्श और नैतिकता से काई संबंध नहीं रहा। राजनीतिक दलों की बढ़ती संख्या, आपसी फुट, गुटबाजी, नीजि स्वार्थ को प्रश्रय देने की प्रवृत्ति, भाई भतिजावाद, आपसी अंर्तविरोध के कारण बुध्दिजीवि वर्ग स्वयं को राजनीति से तटस्थ रखने लगा था। इसी का फायदा राजनीतिज्ञों ने उठा लिया और राजनीति में विकृतियाँ पनपने लगी। लोककल्याण की योजनाएँ फाइलों में पूर्ण हो रही थी। 'सत्ताधारियों की प्रगति याने देश की प्रगति' ऐसी धारणा बन गयी थी । प्रजातंत्र के नाम पर जनता की आशा आकांक्षा को कुचल दिया जा रहा था। राजनेता, पूँजीपति, नोकरशाह ने आम जनता का शोषण करके उसे खाकला बना दिया था। जनता को सामाजिक समस्या में उलझाकर उनका ध्यान हटाया गया था। सामान्य मनुष्य भूख और बेकारी से त्रस्त था। डॉ. चंद्रशेखर कहते है, "भ्रष्ट शासन, जनघाती तंत्र, लुच्ची व्यवस्था, दोगली सिंहासन धर्मिता, बेहया शक्ति का वंशानुपात, ध्रुवीकरण यह है हमारा कुल राजनीतिक पर्यावरण ।"[1] सन १९६० से १९८५ तक का समय राजनीतिक दृष्टि से सत्तांतर और उथल पुथल का युग था। "भारतीय राजनीति जीवनमूल्यों से निरंतर दूर होती जा रही थी। राजनीति राजनेता के लिए व्यापार बन गयी। इन सबका परिणाम यह हुआ कि देश आगे बढ़ने के बजाय पिछड गया। इन समस्त परिस्थियों ने व्यक्ति को बहिर्मुख से अंतर्मुख और सामाजिक से वैयक्तिक बना दिया। व्यक्ति आत्मकेंद्रित हो गया। वह स्वहित को सर्वोपरि मानने लगा। अवसरवादिता, स्वार्थाधता, बेईमानी, भ्रष्टाचार ने देश में एक गहरी अव्यवस्था उत्पन्न की।"[2] प्रजा को पुत्र और राजा को ईश्वर समान मानने की परंपरा यहाँ नष्ट हो गयी। हताश अभावग्रस्त जनता प्राथमिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए भटक रही रही थी। साठोत्तरी युग की राजनीतिक विभिषिका वर्तमान युग में भी मौजुद है।

कहानीकार हिमांशु जोशी:

'आदमी जमाने का कहानी' के कहानीकार हिमांशु जोशी स्वातंत्र्योत्तर काल के कहानीकार है। उनकी कहानियों में ग्रामीण एवं नगरिय जीवन का समान रूप से चित्रण हुआ है। उनकी ३५५ कहानियों १४ कहानी संगहों में संकलित हैं। इनमें से ९३ कहानियाँ मौलिक हैं। हिमांशु जोशी के सृजनशीलता का प्रारंभ काव्य रचना से होता है। वे छठी सातवी कक्षा में ही तुकबंदिया करने लगे थे । यह दौर ४-५ साल तक रहा। उसके बाद वे कहानियाँ लिखने लगे। उनकी प्रथम कहानी 'बूझे दिप' है। यह कहानी 'दिप ही बूझ गया' शीर्षक से १७ जून १९५६ में नवभारत टाइम्स के रविवारीय पृष्ठ पर छपी थी। इस कहानी के अंत में नायक की मृत्यू हो जाती है। जब यह कहानी उनके मित्र के पत्नी ने पढ़ ली, तो उसे लगा कि इस कहानी में जो घटित हुआ है वही मेरे साथ होगा। हिमांशु जोशी ने निर्णय लिया कि वे कभी दुखांत कहानियों नहीं लिखेंगे। क्योकि 'साहित्य का धर्म जीवन है, मर्म जीलाना है, मृत्यू नहीं।' जोशी जी एक

भावुक और संवेदनशील व्यक्ति है। इस घटना ने उनके चिंतन को एक नई दिशा दी है। अतः उनका प्रथम कहानी संग्रह 'अंततः' ११ कहानियों के साथ प्रकाशित हुआ। जो मानवीय संबंध और संवेदना की खोज करता है। अंततः कहानी संग्रह में 'आदमी जमाने का' कहानी संग्रहित है। इस कहानी को राजनीतिक, सामाजिक एवं आंचलिक कहानी के कोटी में रखा जा सकता हैं।

शीर्षक की सार्थकता:

कहानी का शीर्षक अपने आप में सार्थक है। परिवर्तन सृष्टि का नियम है। समय के साथ बदलना जीवंतता का लक्षण है। परंतु इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उर्ध्वगामी परिवर्तन के लिए संवेदनशीलता और नैतिकता आवश्यक है। तभी उसे विकास की संज्ञा दी जा सकती है। अन्यथा परिवर्तन अवनति का कारण भी बन सकता है। भारतीय राजनीति की यह विडंबना रह चुकी है कि यहाँ सरकार बनती है, गिरती है लेकिन सुधरती नहीं है। 'अपने मूलभूत अधिकारों की रक्षा करते हुए देश विकास में सहयोग देना' यह प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। ऐसा न होने कारण राजनीति के क्षेत्र में अनेक विकृतियों निर्माण हो गयी है। स्वतंत्रता के सात दशक के बाद भी देश का अपेक्षित विकास नहीं हो पाया है। जन सामान्य की स्थिति में विशेष सुधार नही हो रहा है।

राजनीति पर व्यंग्य:

प्रस्तुत कहानी भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था का पर्दापाश करती है। राजनीति स्वार्थ सिध्दि का साधन बनकर रह गयी है। कहानी का नायक घुग्घू बाबू के द्वारा कहानीकार आज के स्वार्थी, धनलोलूप, निकम्मे, लाचार एवं झूठे राजनेता की पोल खोल देता है। ऐसे नेता जनता की आँखों में धूल झोंक कर अपना बेडा पार जगा लेते है। चुनाव के पहले का सामान्य नागरिक चुनाव में जीतने के बाद करोडपति बन जाता है। सडकें हर साल बनती है और हर साल उखडती है। पंचवर्षिय योजना का लाभ सामान्य जनता को नही मिल पाता है। भ्रष्ट राजनेता की जयजयकार होती है। और देश के भविष्य निर्माण में शिक्षा क्षेत्र में तीस साल व्यतित करने वाले शिक्षक की कोई अहमियत नहीं है। इस राजनीतिक यथार्थ को जाशी जी व्यंगात्मक भाषाशैली में स्पष्ट करते है।

आम जनता की लडाई व्यवस्था और अपने आप से है। चूंकी इस विकृत व्यवस्था के लिए कुछ हद तक वह स्वयं भी जिम्मेदार है। व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य स्वलाभ बन गया है। वह आत्महानी नहीं चाहता है। इसी का फायदा नेता लेता है राजनीति नेता के लिए आखडा बन गया है। जिसमें वे अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते है। इस ढोंगी और प्रदर्शन प्रवृत्ति के चपेट में अनगिनत जनता नाश के गर्त में चली जाती है। संवेदनहिनता की पराकाष्ठा पर पहुँचे नेता अपनी पत्नी और बच्चों को ढाल बना लेते है।

कहानी की विभिषिका ग्रामांचल से संबंधित है। मिश्रा जी तीस साल वनस्पति शिक्षक

की नौकरी से अवकाश प्राप्त कर अपने परिवार सहित बाकी का जीवन गाँव बिताने के विचार से गाँव लौटते है । गाँव का स्वयंघोषित नेता घुग्घू बाबू प्राथमिक पाठशाला के आठ दस बच्चों के साथ स्टेशन पर मिश्रा जी का स्वागत करता है। इस स्वागत सत्कार पीछे घुग्घू बाबू का अपना स्वार्थ है। सरकारी अनुदान के कुछ रूपये ग्रामविकास के नाम पर खर्च कर देते है और बाकी की राशी हड लेते है। उन्होंने कन्यारत्न पाठशाला की इमारत रातोरात खड़ी कर दी है। जिसकी दिवार बारिश के पहले ही गिर कर हरिराम की अलसी-गधी लडकी की मृत्यू हो जाती है। श्रमदान से तालाब बनवाया है। सव्वा तीन मील लम्बी सडक बनवायी है। लम्बा चौडा फलोद्यान जिसमें नागपंचमी के दिन सव्वा इक्कीस पेड लगयवाये थे। फलोद्यान के लिए खुद की थोडी जमीन दान देकर उदारता का ढोंग रचा है। नौ पानी की डिग्गियों बनवायी है, जिसमें एक बूंद पानी नहीं है और गांधी पंचायत को अपना आवास बना लिया है। पंचायती गाय का दूध अपने ही बच्चों को पिलाते है। गाँव में हर घर पर मृत्यू का साया मंडराता रहता है। कोई न कोई बिमार होता है। इसलिए घुग्घू बाबू वैद्य के साथ ब्राह्मण को भी बुला लाते है। साढे तीन हाथ का कपडा धर देते है। इस धोकाधड़ी का उन्हें जरा भी अफसोस नहीं है। जिस प्रकार पंचवर्षिय योजना के ऑकडे कागजात पर घुडदौड करते है, उसी प्रकार घुग्घू बाबू के कार्य की घुडदौड अखबार में होती है। गाँव की भोली भाली जनता को इस बात का संतोष है कि, "घुग्घू बाबू की प्रसाद से इलाका चमक उठा है नहीं तो सरकार भला कहाँ पूछे?"[3] गाँव की अज्ञानी जनता घुग्घू बाबू जैसे भ्रष्ट नेता पर विश्वास रखती है। गाँव के पिछडेप। का मूल कारण मूलभूत सुविधा का अभाव, शिक्षा का अभाव, रोजगार की समस्या, आदर्श नेतृत्व का अभाव है।

इस कहानी में भ्रष्ट अफसर के भी दर्शन होते है। सरकारी अनुदानित योजनाओं के परिक्षण के लिए डिप्टी कमिश्नर जमील साहब आते है। जमील साहब और मिश्रा जी स्कुल के जीवन में दोस्त रहे है। इसलिए घुग्घू बाबू मिश्राजी के पाँव पकडते है, नाक रगडते है, बिमार पत्नी की, पिता की बच्चों की कसम देकर झूठ का साथ देने का वचन लेते है। जमील साहब रात के अंधेरे में आये इसका पूरा इंतजाम करते है। उन्हें स्वागत सत्कर और प्रशंसा से खुश किया जाता है। जमील साहब प्रसन्न होकर गाँववालों को घुग्घू बाबू का अनुकरण करने की सलाह देते है। स्कुल के बच्चों को घुगघू बाबू का आदर्श लेने का संदेश देकर १५००० का अनुदान देने का आश्वासन देकर चले जाते है। गाँव की समसयाएँ वही की वही रह जाती है। घुग्घू बाबू और जमील साहब जैसे भ्रष्ट लोगों के कारण ही गाँव का विकास नहीं हो रहा है।

घुग्घू बाबू अपने अपराध को भूल का नाम देकर कहते है "मैंने देश के लिए कितना कुछ नहीं किया। फिर पंचायत घर में मैंने सिर टिका लिया तो कौन सा अपराध किया। पंचायती भैंस का दो बूँद दूध कभी क्दास मेरे बच्चों के गले उतर गया तो कौन सा अपराध हुआ। लोगों ने चाँदी कर ली। घर भर

लिए। मैंने दो जून खाने का सामान जुटा लिया तो कौन सा अपराध कर डाला।"[4] घुग्घू बाबू में मानवीय पीडा की अनुभूती का बोध नहीं है। जब पाठशाला की दिवार गिर कर हरिराम की लडकी की मृत्यु हो जाती है. तो जनसेवा का दंभ भरने वाले घुग्घू बाबू हमदर्दी दिखाने के लिए स्मशान तक पहुँचते है और जनता पर अपना सिक्का जमाते है। आज के नेता वर्ग में मनुष्य के प्रति कोई सदभावना नहीं है और आदर्श मूल्य भी स्वीकार नहीं है। इसलिए घुग्घू बाबू मिश्रा जी को वचन में बांधकर स्वयं को सुरक्षित रखते है। ईमानदार लोग धूर्त नेता को खतरा लगते है। जितना बेईमान, धाखेबाज, स्वार्थी, भ्रष्टाचारी है उसकी ताकद उतनी ही बढ़ती है। ईमानदार व्यक्ति को बेईमान बनने के लिए मजबूर किया जाता है। बुध्दिजीवि वर्ग अनिच्छा से उससे संबध्द है।

निष्कर्ष:

अतः आदमी जमाने का कहानी में जनता की भावना के साथ खिलवाड करने वाले, गांधीवाद का झूठा प्रदर्शन करनेवाले भ्रष्ट नेता का नग्न रूप रूपायित हुआ है। जिसमें लेखक सफल हुआ है। अतः आदमी जमाने का कहानी युग सापेक्ष है। कथानक संपूर्ण कहानी में व्याप्त वह सूत्र है जो कहानी के विविध प्रसंगों से संबंध जोडता है। कहानी समाप्त हो जाने के बाद भी वही संबंध सूत्र पाठक के मस्तिष्क में बाहरी खाका उपस्थित कर देता है। कहानी रोचक और कौतुहल जगाने में समर्थ है। प्रवाहमयता, प्रभावोत्पादकता, मौलिकता इसकी कथागत विशेषताएँ है। ग्रामीण जीवन की सभी प्रवृत्तियाँ उजागर हुयी है।

संदर्भ-सूची:

1. दिनेशचंद्र वर्मा- समकालीन नाटक एवं नाटककार, पृष्ठ ११
2. आठवे दशक की हिंदी कहानी में जीवन मूल्य, पृष्ठ ५२
3. हिमांशु जोशी- अंततः कहानी संग्रह पृष्ठ ७५
4. वही, पृष्ठ ७९